

DPN 5568

Title : ग्रहाचर्चन विधि / GRAHARCCANA VIDHI

Run. No. 6259

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21 x 7

Folios 7

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. : मन्त्रांशुका गनं गनं ५ /
mantra monograms included

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / wormholes

अभिहित होम मंगल, दुःख, वृष्टिप्राप्ति,
इत्यादि नवग्रहदेवतायां पूजा, अर्चन
वस्तुतः उल्लेखः to navagraha
devatas are described.

Beginning, colophon, post-colophon :

15

10

5

0

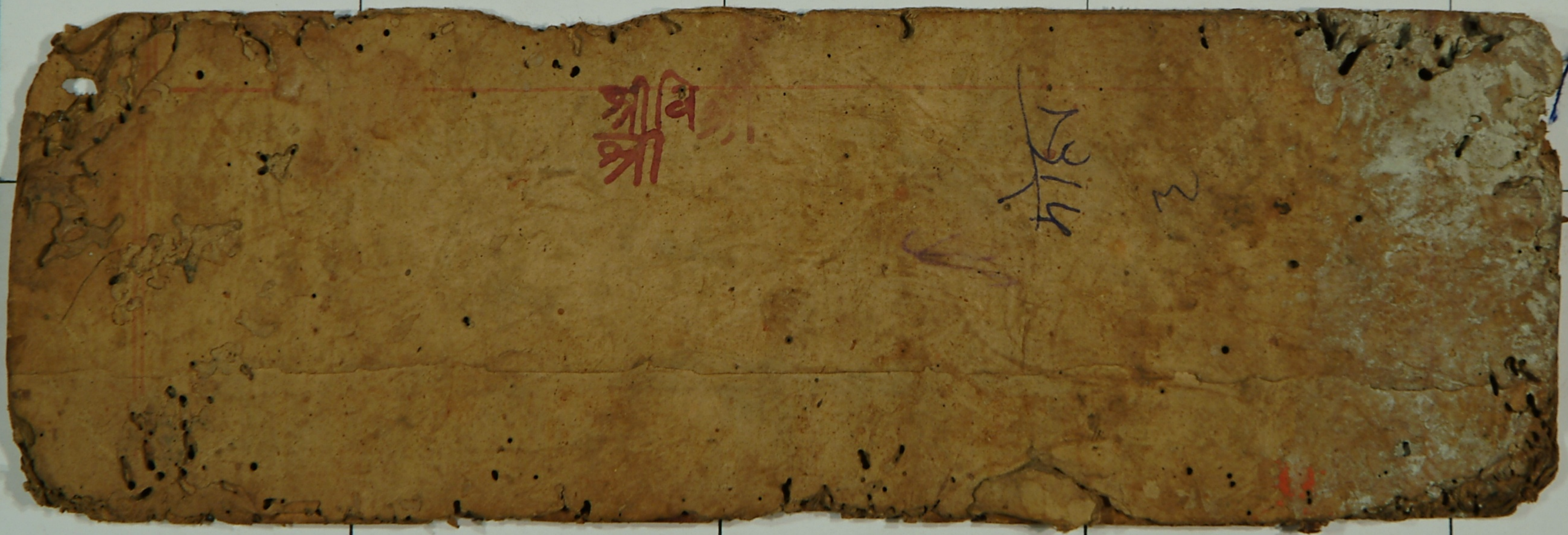
cmts.

5

10

15

20



श्रीवि
श्री

13/4

3

ॐ ह्रीं गं गं गं ॥ २ ॥ ॐ सयं सयं सयं गीति ॥ २ ॥ ॐ वक्रयं क्लानं ॥ १० ॥ विष्णु वक्राटमसीति ॥ ११ ॥ ॐ नम
॥ सुवायति ॥ १२ ॥ आवाहनादि ॥ १३ ॥ निसुममलहाना चर्चनं ॥ ॥ गता कलमयूजा ॥ ॐ आ डि धु
कलगमिति ॥ १ ॥ ॐ यथै नद्यः सनस्वनी ॥ २ ॥ ॐ ॐ ममर्गमिति ॥ ३ ॥ ॐ डयकनगनीति ॥ ४ ॥ आवा
हनादि ॥ १३ ॥ निसुममलहाना चर्चनं ॥ ॥ ॥ गता आदित्याय हार्चनं ॥ हकानादिषु उक्त्यास ॥ १ ॥ ॐ आ
दित्याय ॥ १३ ॥ निसुममलहाना चर्चनं ॥ ॥ ॥ गता आदित्याय हार्चनं ॥ हकानादिषु उक्त्यास ॥ १ ॥ ॐ आ
कनः ॥ यथै गं गं गं मदिगि ॥ सयं सयं सयं गीति ॥ १ ॥ ॐ आदित्याय ध्यानय

यं नमः ॥ ॐ आ कृष्ण ननजसर्गि ॥ १३ ॥ निसुममलहाना चर्चनं ॥ ॥ ॥ गता आदित्याय हार्चनं ॥ हकानादिषु उक्त्यास ॥ १ ॥ ॐ आ
मः ॥ ॐ आ कृष्ण ननजसर्गि ॥ १३ ॥ निसुममलहाना चर्चनं ॥ ॥ ॥ गता आदित्याय हार्चनं ॥ हकानादिषु उक्त्यास ॥ १ ॥ ॐ आ
नन ॥ नकाकन ॥ नकायक्यायवीन ॥ यथै नका कनवीन ॥ नकगिल ॥ नैवद्यदविद्वीन ॥ धूयकन्द
न ॥ दीयनकवृत्तिका ॥ ननमानिक ॥ १३ ॥ निसुममलहाना चर्चनं ॥ ॥ ॥ गता आदित्याय हार्चनं ॥ हकानादिषु उक्त्यास ॥ १ ॥ ॐ आ
कौसस्वादा ॥ १० ॥ ॥ ॥ कलिगदगं सजान ॥ विष्णुवासयमीरुवः ॥ काग्ययस्य धिदेवर्त्त दगिजा
तिनमासुते ॥ यजमानस्य यथागत आदित्या गुरुडत्यनयीजगन्मन्थर्थ आयूकामनार्थ आदित्या

15
 10
 चनविधे सर्वविधियत्रियुधुमसु ॥ आदित्यदवतासूयागाववदारवन्दु ॥ यंजमाननित्रागिम
 सुं ॥ ॐ नित्यादित्याचन ॥ ॥ अथ सामयदाचन ॥ सकावादिषठङ्गनास ॥ ॐ सामाय
 डमायआयः ययधियदवताय ॥ दमासनीनमः ॥ यूर्य २ ॥ ध्यान ॥ ग्वताग्वताम्वनधंवा दग्गाह्वगवि
 रुषवीमदायानिद्विवाकृष्ट करुणावेनद ॥ गगा ॥ सामायध्यानयूर्यनमः ॥ वद ॥ सामायनमः
 ॥ ॐ ॐ मृदवा ॥ ॐ नित्यादित्याचन ॥ ॐ सामायनमः ॥ ॐ ययधियदवतायनमः ॥ ॐ अयस्कनमः
 नति ॥ यियाअलि ॥ ॐ मं सौ स ॥ सामायनमः ॥ ३ ॥ समिधयला ॥ वन्दनग्रीखलु ॥ ग्वता

5
 0 cmts. 5 10 15 20
 कग ॥ ग्वतयक्लायवीत ॥ ययधियदवताय ॥ धूपका ० यल ॥ दीयग्वतवृलिका ॥ नेत्राद्यदीवादन
 ॥ वीदि ॥ गतिल ॥ वलमृति ॥ धाउवार ॥ यिंगलामि ॥ ददि ॥ नगर्ख ॥ म ॥ लजाय ॥ मं सौ स ॥ खादा ॥
 १० ॥ भाग ॥ सामकृष्णवउर्दग्गा कलिकाख्यसमयुति ॥ अगिथ ॥ गगर्ख ॥ वेग्वजातिनमासुत ॥
 जजमानस्ययथागतसामगृहडयन्नयीजगन्मर्थ आयुकामनार्थ सामाचनविधे सर्वविधि
 यत्रियुधुमसु ॥ सामदवतासूयागाववदारवन्दु ॥ यंजमाननित्रागिमसु ॥ ॐ नित्यादित्याचनविधि
 ॥ ॥ अथ अंगवाचन ॥ ककावादिषठङ्गनास ॥ ॐ अंगवायस्कन्दायदगिययधियद

वताय वन्दमासर्ननमः॥ यथै२॥ ॥ ध्यानं ॥ नकमाल्याम्वनधना गृलगकिधनाय च । चतुर्भुज
 मंभगमा वनदस्याद्वनासतः॥ ॐ अंगनाय ध्यानयुष्मिन् नमः॥ वद ॥ ॐ अंगनाय नमः॥ ॐ अंगि
 मूर्द्धादिनि ॥ ॐ स्कन्दाय नमः॥ ॐ यदस्कन्दयथमिति ॥ दक्षिणयधिवदताय नमः॥ ॐ अंगनाय धि
 वाति ॥ शिवाय नमः॥ ॐ कौं कौं सं ॥ ॐ अंगनाय नमः॥ ३ ॥ समिधयदिन ॥ नकचन्दन ॥ नका
 दग ॥ नकयज्ञाय वीग ॥ यथनका ॥ धूप ॥ धूप ॥ दीपनकवृत्तिका ॥ नैवद्यगुणदन ॥ वीक्षि
 कतिल ॥ नलककर्मन ॥ धाउयद ॥ धूमकेतामि ॥ दक्षिणयनशर ॥ मधुलजाय ॥ कौं कौं सं ॥ सादा ॥ १० ॥

सां ॥ धूर्वाषारादगम्याविर् नकमनदनाद्युति ॥ राजद्वजकूलस्कन्द अंगमर्गगतर्गनमः॥ यजमानस्य
 यथागतं अंगना गृहडयन्तपीठ ॥ न्यर्थ आयुका मनार्थ अंगना च न विधे सर्वविधियत्रियुत्तुमसु
 ॥ अंगनाय वतासूयीतावनदारवन्दु ॥ जजमाननित्रागिसु ॥ ॐ नित्यं नमः ॥ ॥ अथ वृद्धय
 दार्चनं ॥ वकाजादि ॥ उग्रन्यासः॥ ॐ वृक्षयनाय नमः॥ यविष्णुयधिवदताय वन्दमासर्ननमः॥ यथै२॥
 ध्यानं ॥ पीतमाल्याम्वनधना कर्तुकाचिसमद्युति ॥ स्वप्नचर्मगदायामि सिद्धिस्तवनदावृधः॥ वृक्ष
 यध्यानयुष्मिन् नमः॥ वद ॥ वृक्षयनमः॥ ॐ वृक्षस्वाग्रति ॥ नानायनाय नमः॥ ॐ वृक्षविष्णुविनि ॥ विष्णु

यस्य धिदवताय नमः ॥ उं विष्णवे नमः ॥ शिवाय नमः ॥ उं वाँ वौ सः ॥ वृक्षाय नमः ॥ ३ ॥ सभिधाय
मां ॥ चन्दनं कुरु ॥ यीता दत्त ॥ यीतय क्लायवीत ॥ यूयकं सति ॥ धूयस्य दत्ता ॥ दीययीत वृ
हिका ॥ नैवद्यदधिरक्त ॥ वीदिना जसर्षय ॥ नत ॥ धातुस्वन ॥ ज० नामि ॥ दक्षिणसुवर्ण ॥ मधुल
जाय ॥ वाँ वौ सः ॥ १० ॥ साय ॥ धनिष्ठा ददगी जन्म मद्यदत्ता समूहवना नायना धिदवर्ष वृ
धवे नमः ॥ यैजमानसुयथा गतवृध गृह्णत्यनयीत ॥ नृध आयूकामनार्थवृधार्चनविध
सर्वविधियनियुक्तमस्तु ॥ वृधदवतासूयीतावनदारवन्दु ॥ यैजमाननिनामि मस्तु ॥ ॐ नमः वृधार्चनी ॥

15

10

5

0

cm.

5

10

15

20



15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20



15

10

5

0

cm.

5

10

15

20

